International Referred Research Journal, April, 2011. ISSN- 0974-2832 RNI-RAJBIL 2009/29954.VoL.III *ISSUE-27

शोध पत्र

हिंदी उपन्यासों में स्त्रीवाद

* डॉ. मुरलीधर अच्युतराव लहाडे ** शिवाजी वैद्य

* जनविकास महाविद्यालय, बनसारोला, केज, बीड
** बी. रघुनाथ महाविद्यालय, परभणी

April, 2011

भारतीय समाज में स्त्री को कनिष्ठ दर्जा दिया गया है ऐसे समाज से बाहर निकालने के लिए व्यक्ति की पहचान के लिए विभिन्न आन्दोलन हो रहे हैं। स्त्री के परम्परागत रूप को ही आज समाज के सामने प्रस्तुत किया जा रहा है। इसका परिणाम यह हुआ की आज भी कई स्त्रीयों की मानसिकता और वैचारिकता में बदलाव नहीं आया है। उसे ऐसे बधनों से बाहर निकालकर एक मानव के रूप में प्रस्तुत करना जरूरी है। आधुनिक कालखण्ड तक आते-आते स्त्री को अपने 'स्व' के अस्तित्व की पहचान होने लगी। अपनी अस्मिता की पहचान के कारण उसके विचारों में परिवर्तन होने लगा। आज तक स्त्री पुरूषी समाज को अपना सर्वेसर्वा समझती थी लेकिन आज उसने अपने सामर्थ्य को पहचान लिया है। १९६० के बाद स्त्रीवाद का प्रचार-प्रसार बड़ी तेजी से विश्व में फैल गया। तुलनात्मक दृष्टिकोण से भारतीय स्त्री पाश्चात्य स्त्री से अधिक हीन दृष्टिकोण की शिकार है। लेकिन यथार्थ यह है कि आज भी उसकी स्थिती में कोई परिवर्तन नहीं है। घर और बाहर इन दो स्तरों पर वह उपेक्षा की शिकार हो रही है। भारतीय स्त्री आज अपने 'स्व' को पहचानने लगी, सोचने लगी और इसी पार्श्वभूमि पर यहाँ स्त्रीवादी आन्दोलन का आरम्भ हुआ। स्त्री की स्थिति में परिवर्तन लाने के लिए सबसे पहले उसको शरीर से परे देखना आवश्यक है। जिस दिन ऐसा होगा उस दिन से उसको मानव का स्थान दिया जायेगा। इसके संदर्भ में तस्लीमा नसरीन लिखती है -"जिस दिन यह समान स्त्री शरीर का नहीं - शरीर के अंग प्रत्यंग का नहीं, स्त्री की मोधा और श्रम का मूल्य सीख जाएगा, सिर्फ उस दिन स्त्री 'मनुष्य' के सल में स्वीकृत होगी।"१

स्त्रीवाद को समाज में गलत दृष्टिकोण से देखा जा रहा है। सामान्यतः यही सोचा एवं समझा जाता है कि स्त्रीवाद आन्दोलन नारी को पुरूषों पर वर्चस्व स्थापित करने के लिए "छेडा गया आन्दोलन है। भारती जाधव इसके संदर्भ में लिखती हैं -"स्त्री मुक्ती आन्दोलन पुरूष के विराध में आन्दोलन न होकर वह जुल्म जबर्दस्ती की प्रवृत्ति के विरोध की लड़ाई है।सहयोग और सहजीवन की माँग करने वाला एक आन्दोलन है।समान अधिकारों की माँग करने वाला और मात्र 'पुरूष' के रूप में पैदा होने के कारण उसे जो अधिकार मिल गये हैं और मात्र स्त्री का शरीर मिलने के कारण वह अधिकार न देनेवाले समाज के विरोध में यह विद्रोह है।"२ स्त्रीवाद से तात्पर्य स्त्री ने औरों पर अधिकार, हक्क प्रस्थापित करना न होकर औरतों के सवालों के सम्बध में समाज में एक विस्तृत नजरिया निर्माण करके उसके अनुसार समाज का पुनः निर्माण करना है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् स्त्री विषयक दृष्टिकोणों में परिवर्तन हुआ नारी सामाजिक, राजनैतिक क्षेत्र में सहभागी होने लगी। नारी जागरण का भी आंदोलन लडा। स्वातंत्र्योत्तर उपन्यास साहित्य में नारी के इसी बदले हुए दृष्टिकोण का व्यापक रूप में अंकन किया गया है।कामकाजी तथा पारिवारिक धरातल पर नारी को कौनसी समस्याओं का शिकार होना पड़ा, इन समस्याओं के साथ संघर्ष करने की नारी की मानसिकता आदि इन उपन्यासों के प्रमुख विषय रहें हैं। राजी सेठ के 'निष्कवल' इस उपन्यास में नीरा अपने जीवन में वह अकेलेपन की पीड़ा को भोग रही है। नीरा को अपनी माँ कभी अपनी नहीं लगी।नीरा की माँ ने उसे पढ़ाई के बहाने अपने से दूर रखा था। इस बात की वह नाराजी व्यक्त करती है -"कितना अजीब होता है न इतनी बड़ी दुनिया में कुछ भी अपना न होता... तुम मेरी मम्मी की बात कर रहे हो न ? मैं कुछ भी नहीं हूँ उनके लिए। जब जहाँ चाहा, ठेल दिया। मेरी पढ़ाई-लिखाई की बात को प्रमुख बनाकर।"३ यहाँ नीरा अपने अस्वित्व के लिए -झगड़ रही है। वह यह मानने वाली नहीं है कि वह मेरी माँ है माँ जीस अवस्था में रखना चाहती हो वैसा ही रहना चाहिए यह परम्परागत भावना को वह नकारती है। नीरा रमण के साथ विवाह का फैसला करने के बाद भी बासू का विचार करती है। वह विशाल से बड़ी आधीरता से पूछती है।नीरा को यकीन है कि बासू उसे एक दिन भूल जाएगा। वह कहती है, "भूल जाएगा। जैसे मैं भूलती जा रही हूँ... तेजी से"४ इससे ऐसा लगता है कि उसने बासू को छोड़ने का निर्णय मन के लिए तथा अपने भविष्य के लिए जो अच्छा है उसे ही उसने स्वीकार किया था। जो उसने चुना, वही उसके और परिवार के लिए उचित था।

प्रभा खेतान द्वारा लिखित 'पीली आँधी' इस उपन्यास में प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् के वातावरण में इस वाणिक समाज का चित्रण किया है, जो बिना पूँजी अपने घर से सैकडों मील दूर व्यापर की तलाश में निकल पड़ते हैं तथा दर-दर की ठोकरें खाते हुए दूर-दराज शहरों में पनाह लेकर अपनी आँखों के सपनों को पूर्ण करने के लिए कठिन परिश्रम करते हैं। कहीं-कहीं इस समाज से जुड़ी औरतों की त्रासदी को व्यक्त करने वाली मार्मिक उक्तियाँ प्राप्त होती हैं। किशन की पत्नी की उम्र मात्र चौदह वर्ष है। पति के विरह में पीड़ित छोटी हमेशा अपनी परिस्थिति पर विचार करती है। वह सोचती है,"लेकिन आज सुबह कागा मेरी खिड़की पर बैठा था। कौन आएगा ?मुकलावे के बाद जिसके साथ मैं बस दस दिन ही रह सकी थी। उसके ह्रदय में एक हल्की-सी आखिर क्यों हमारे पुरूषों को दिलावरी में जाना पडता है? और वह भी इतनी कम उमर में ?"५ रात-रात पति की याद में जागना इसकी मजबूरी बन गयी है। रात भर जागने के कारण दूसरे दिन सुबह नींद न खुलने के कारण कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

सोमा के विद्रोही कदम जब सुजीत सेन के घर तक पहुँचते हैं, तब उनकी पत्नी चित्रा के आधुनिक विचार भी स्पष्ट होते हैं। चित्रा सुजीत

और सोमा के संबंधों से परिचित होने के पश्चात् भी सोमा को अपने घर में रखकर इसके बच्चे के जनम तक की सभी जिम्मेदारी संभालती है। सोमा को सुजीत की संतान के साथ स्वीकार करना चित्रा का बड़प्पन है।सोमा की आश्चर्य से उसकी शांती को देखती है।लेकिन चित्रा प्यार के अभाव में किसी भी रिश्ते को मात्र ढोने में विश्वास नहीं रखती। वह सोमा से कहती है, "लेकिन जब प्यार नहीं, तब इस व्यवस्था को ढोने से फायदा क्या इससे इच्छा नहीं कि मैं हट जाऊँ ?"६ चार दीवारों को वह घर नहीं मानती। प्रेम को मांगकर कायम रखने में भी उसे विश्वास नहीं। अपने आत्मसम्मान की रक्षा करते हुए वह सोमा और सुजीत के बील से निकलने का निश्चय करती है। बचपन से ही शिक्षित परिवार के संस्कार लेकर पली बढी चित्रा आर्थिक स्वतंत्रता को महत्व देती है। सोमा को बी.एड्. करवा के नौकरी लगाने का कर्तव्य भी निभाती है। वह सोमा से कहती है -"जो तुम्हारे साथ घटा, वह तुम्हारे साथ या किसी और भी औरों के साथ घट सकता है। कम से कम अपने पैर पर खड़ी औरत भीख तो नहीं मांगती"७ चित्रा प्रेम को शाश्वत नहीं मानती प्रेम विवाह करने वाले चित्रा और सुजीत के बीच प्यार नहीं रह जाता तो क्या सोमा और सुजीत का प्यार निरन्तर प्रवाहित रह सकता है? वह अपनी बच्ची को लेकर उनके बीच से चची जाती है। ताईजी के मृत्यु के पश्चात मन में चल रहे द्वंद्वं से छुटकारा पाने के लिए सोमा को निरन्तर चित्रा की याद आती है। मैत्रेयी पुष्पा का 'चाक' यह उपन्यास एक विद्रोह गाथा है। करमवीर की पत्नी, साधजी और हुकुमकौर की बहू तथा कोरिया और थानसिंह की भाभी रेशम अपने पति की मृत्यू के पांच महिने पश्चात् गर्भवती रह जाती है। अपने द्वारा उठाया गया यह कदम उसे गलत नहीं लगता। वह अपनी सास से जिस प्रकार बातें करती है, उससे इसकी विद्रोही प्रवृत्ति सामने आती है। पत्नी की मृत्यु के पश्चात् पति दूसरी शादी कर सकता है और पत्नी मात्र जीवन भर इसके दु:ख में डूबी रहे, यह इसे स्वीकार नहीं है। वह मनुष्य होने के कारण देह की जो आवश्यकता है,उसे पूरा करना जरूरी है वह अपनी सास से कहती है, "माइयों ! तुम मेरे पीछे क्यों पड़ गई हो। मेरे चालचलन की -झंडी फहराना जरूरी है? बिरथा ही छानबीन करने में लगी हो। आज को तुम्हारा बेटा मेरी जगह होता तो पूछती की तू किसके संग सोया था ? अब उसकी बाँह गह ले। मेरे पीछे तेरहीं तक का भी सबर न करता और ले आता दूसरी। तुम खुश हो रहीं होती कि पूत की -झड़ी जिन्दगी बस गई। पर मेरा फजीता करने पर तुली हो।"८

निष्कर्ष :

समाज के बदलते परिवेश में व्यक्ति की अपनी स्वतंत्र विचारधारा के कारण वैयक्तिक चेतना विकसित हो रही है। इस वैयक्तिक चेतना पर विभिन्न परिस्थितियों का प्रभाव होता है। नैतिकता और -झूठे आदर्शों के कारण विद्रोह करती नारी भीतर से टूटी है और इस टूटने में भी उसने अपने सपने सजाये हैं। यह वह समय है, जहाँ वह अपना भविष्य खुद बनाना चाहती है। समाज में औरत को मनुष्य के रूप में स्वीकृति मिले तथा बहुत समय से चले आ रहे असमानता को नष्ट करने का कार्य आरम्भ किया जाये।

संदर्भ ग्रंथ

१)तस्लीमा नसरीन-अनुवाद मुनमुन सरकार-औरत के हक में -पृ. ९९ २) भारती जाधव-स्त्री मुक्तितील सत्य-पृ. ९ ३) राजी सेठ-निष्कवच-पृ. १२ ४)राजी सेठ -निष्कवच -पृ.१३ ५) प्रभा खेतान -पीली आँधी-पृ. ०५ ६)प्रभा खेतान -पीली आँधी -पृ. २५५ ७) प्रभा खेतान-पीली आँधी-पृ. २५६ ८) मैत्रेयी पुष्पा-चाक -पृ. १९